Speech of Shri Rahul Gandhi at the AICC Meeting 17-11-2007

आदरणीय अध्यक्षा जी,
माननीय प्रधानमंत्री जी
सम्मानित वरिष्ठ नेतागण और मेरे युवा मित्रों,
भाइयों और बहनों, नमस्कार।

आज मैं आपके सामने AICC General Secretary की हैसियत से खड़ा हूँ। आपने मुझे यह ज़िम्मेदारी दे कर मुझमें अपना विश्वास प्रकट किया है इसके लिए मैं आदरणीय सोनिया जी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं और आप सबका बहुत आभारी हूँ। मैं सच्चे दिल से इस ज़िम्मेदारी को पूरा करूंगा।

मैं अपने युवा साथियों की ओर से आदरणीय प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ। हमें उनके मार्गदर्शन से प्रेरणा मिलती है।

आज भारत तेज़ी से विकसित हो रहा है। हम सब गर्व से कह सकते हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था मज़बूत है। हमारे बुजुर्गों ने इस परिवर्तन की नींव रखी। हमें उन पर गर्व है। अपने नौज़वान साथियों पर भी गर्व है जिनके बल पर भारत आगे बढ़ रहा है।

लोग भारत के नागरिकों को अलग–अलग निगाह से देखते हैं। मेरा भी अपना नज़रिया है। जब भी मैं किसी देशवासी से मिलता हूँ मुझे सिर्फ़ उसकी भारतीयता दिखाई देती है। मेरे लिए उसकी यही पहचान है। अपने देशवासियों के बीच न मुझे धर्म न वर्ग न कोई और अन्तर दिखता है। अगर मुझे अन्तर दिखता है तो सिर्फ़ एक – वह मौक़े का अन्तर है।

हमारे देश में एक तरफ़ वे लोग हैं जिन्हें देश के निर्माण में भाग लेने का मौक़ा मिलता है। दूसरी तरफ़ वे लोग हैं जिन्हें इस प्रगति में हिस्सेदारी का मौक़ा नहीं मिल पाता। यही अन्तर मेरी राजनीतिक सोच में महत्व रखता है। आख़िर ग़रीबी क्या होती है – बग़ैर मौक़े का अमीर ग़रीब कहलाता है।

हमें अपनी क्षमताओं पर गर्व होना चाहिए। लेकिन इससे भी अधिक हमें उन करोड़ों देशवासियों पर गर्व होना चाहिए जिन्हें अभी तक प्रगति का मौक़ा नहीं मिल पाया है। वे ग़रीब वे किसान वे मजदूर जो दिन–रात परिश्रम करके भी कुछ नहीं पाते। लेकिन इसके बावजूद अपने देश के प्रति उनके दिलों में सम्मान और आस्था की भावना बनी रहती है। वे तिरंगे पर न्यौछावर होने को सदा तैयार रहते हैं।

कई लोग समझते हैं कि ग़रीबों को विकसित करना एक तरह की उदारता है। यह सोच एकदम ग़लत है। यह नज़रिया इस बात को नकारता है कि भारत की आम जनता ही हमारी सबसे क़ीमती सम्पति है। उन्हीं के दिलों में वह ज्वाला है परिवर्तन की तमन्ना है जिसके बल पर देश का नवनिर्माण होगा। इस ज्वाला को आग में बदलने के लिए हमें भारत के ग़रीब और पिछड़े लोगों को देश और विश्व की अर्थव्यवस्था से संयोजित करना पड़ेगा। मैं समझता हूं कि यही हमारी पीढ़ी की सबसे बड़ी चुनौती है।

दक्षिण से आए हुए अपने साथियों के लिए अब मैं कुछ शब्द अंग्रेजी में बोलूंगा।

The true realisation of India's power lies in igniting the fire of ambition of our aspiring millions. In order for this flame to spread, India needs to be connected within itself and to the rest of the world.

We need to connect India physically through roads, electricity, telecommunication, railways and other infrastructure. We need to connect India intellectually through literacy, education and training. Finally, we need to connect India economically through the creation of jobs and livelihoods.

It is we the youth who have the greatest stake in our future. It is from among the youth that tomorrow's leaders will rise. I firmly believe that the Youth Congress and the NSUI can and should become the vehicles for young Indians who want to serve our nation.

Over the last few weeks, I have spent many hours with our workers and office-bearers. I am proud to say that there are many among them with talent, character and a will to serve. But there is work to be done.

In my travels, I am often asked two questions. The first is from young people who ask, "How can we join politics and help India?" The second question which comes from within the Youth Congress and the NSUI is "How do we progress in the organization?"

These two questions touch at the heart of what needs to be changed.

If we are to truly become an organization that represents the youth of our country; if we are to truly develop leaders of whom this nation can be proud, we need to do two things.

The first is to build an organization that is open and relevant to the broad range of young Indians who believe in our values and seek to serve the nation.

The second is to build a meritocratic organization. Young people bring tremendous passion and energy into our organization. We must see to it that they are accountable. It is our duty to ensure that their progress is linked to their performance.

I stand here today to urge every young Indian to join us and help us build institutions worthy of your dreams, your values and your capabilities.

Jai Hind.